SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

श्री लाल शुक्ल के ''राग–विराग'' उपन्यास में सामाजिक जटिलता का विश्लेषण

हिना केशरवानी, शोध छात्रा, हिंदी विभाग
उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत
गोरख नाथ पांडेय, (Ph.D.), हिंदी विभाग
उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
हिना केशरवानी, शोध छात्रा, हिंदी विभाग
उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत
गोरख नाथ पांडेय, (Ph.D.), हिंदी विभाग
उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 02/03/2021
Revised on : -----
Accepted on : 09/03/2021
Plagiarism : 01% on 03/03/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Wednesday, March 03, 2021
Statistics: 20 words Plagiarized / 1872 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected Your Document needs Optional Improvement.

Jh yky 'kqDy ds "jkx&fojkx" miU;kl esa lkekftd tfVyrk dk fo'ys"k.k Jh yky 'kqDy fgUnh ds cgqfo/k lkfgR;dkj gksus ds lkFk çfl) miU;kldkj Hkh gSA mUgksaus vius thou dky es ukS miU;klksa dh jpuk dhA os viuh cs/kd –f"V ls lekt ds gj dksus dks VVksyus dk ç;kl djrs gSA os ,sls jpukdkj gS tks vius fo"k; dk pquko lekt dh tfVyrkvksa ls djrs gSaA 'lwuh ?kkVh dk lwjt' ls ysdj 'jkx njckjh']'edku']'igyk iM+ko' ls gksrs gq, 'foJkeiqj dk lar' rd mUgksaus viuh lw{e vkSj cs/kd –f"V dk ifjp; fn;kA blh rjg vius ys[ku dk;Z dks c<+krs gq, vxyh dM+h ds :i esa budk vkf[kjh miU;kl 'jkx fojkx' dks ns[kk x;kA 'jkx fojkx' tSlk dkyt;h miU;kl fy[kdj 'kqDy

शोध सार

एक जागरूक साहित्यकार अपने समाज में व्याप्त विसंगतियों, विडंबनाओं, जटिलताओं परम्पराओं संस्कृति आदि का साक्षी होता है और उन्ही में से अपने रचना कर्म के लिए कथ्य चुनता है। श्री लाल शुक्ल जी अपने परिवेश और समाज को पैनी दृष्टि से देखते है। बेहद सरल और बेहद गूढ़ दोनों ही तरह के विषयों को उन्होंने अपनी रचनाओं में उठाया है। प्रस्तुत शोध पत्र में सामाजिक जटिलताओं के विश्लेषण को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द

राग–विराग, आधारभूत परंपरा, ओढ़ी हुई परंपरा, जाति–पाति, अमीरी–गरीबी.

श्री लाल शुक्ल हिन्दी के बहुविध साहित्यकार होने के साथ प्रसिद्ध उपन्यासकार भी है। उन्होंने अपने जीवन काल मे नौ उपन्यासों की रचना की। वे अपनी बेधक दृष्टि से समाज के हर कोने को टटोलने का प्रयास करते है। वे ऐसे रचनाकार है जो अपने विषय का चुनाव समाज की जटिलताओं से करते हैं। 'सूनी घाटी का सूरज' से लेकर 'राग दरबारी', 'मकान', 'पहला पड़ाव' से होते हुए 'विस्रामपुर का संत' तक उन्होंने अपनी सूक्ष्म और बेधक दृष्टि का परिचय दिया। इसी तरह अपने लेखन कार्य को बढ़ाते हुए अगली कड़ी के रूप में इनका आखिरी उपन्यास 'राग विराग' को देखा गया। 'राग विराग' जैसा कालजयी उपन्यास लिखकर शुक्ल जी हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध हुए।

श्री लाल शुक्ल ने 'राग विराग' उपन्यास में प्रेम कथा के माध्यम से सामाजिक जटिलता के विभिन्न रूपों, स्तरों को उजागर करने का प्रयास किया है। इस उपन्यास

में बाह्य सौंदर्य से भी अधिक आंतरिक सौंदर्य पर महत्व दिया गया है। शुक्ल जी के इस उपन्यास में ब्यापक अनुभव, सुंदर कल्पना शक्ति तथा दृष्टि तीनों का संगम दिखाई देता है। अखिलेश ने 'राग विराग' उपन्यास के बारे में कहा है ''यह उपन्यास प्रसन्नता और अवसाद, लगाव और अलगाव, गाँव–शहर, देश–परदेश, राग–विराग, बेसिक परंपरा और ओढ़ी हुई परंपरा, गरीबी–अमीरी के फर्क और संघर्ष की कथा है।''[1] उपन्यास पढ़ने के बाद यह ज्ञात होता है कि अखिलेश द्वारा लिखी गयी यह टिप्पणी एकदम सटीक है। इसके पूर्व के उपन्यासों में शुक्ल जी ने सामाजिक जटिलता को लेकर जो बात कही, यहाँ ठीक उसके विपरीत चीजों को उजागर करने का प्रयास किया। अपने प्रारम्भिक उपन्यासों के पात्रों को व्यंग्य बाण से आहत करते हुए और उनका मजाक उड़ाते हुए शुक्ल जी दिखाई देते थे परन्तु इस उपन्यास (राग–विराग) में उन्होंने एकदम अलग तरीके से पात्रों, घटनाओं और उनके द्वंदों को तटस्थ और निर्मम करते हुए दिखाई दिये। इस उपन्यास की बिषय वस्तु भले ही छोटी रही हो परंतु रचना दृष्टि से एकदम नयापन है।

सुप्रसिद्ध कथाकार श्री लाल शुक्ल की रचना शीलता का नव्यतम और विशिष्ट पड़ाव है– 'राग विराग'। प्रेमकथा के ताने–बाने से बुना गया यह लघु उपन्यास सामाजिक जीवन की अनेक जटिलताओं से टकराते हुए जाति, वर्ग, संस्कृति, बाजारवाद आदि के अनेक धूसर चटक रंग उपस्थित करता है। सम्भवतः राग–विराग हिंदी का पहला ऐसा उपन्यास है, जो प्रेमकथा के जरिए हमारे उबड़–खाबड़ राष्ट्रीय यथार्थ का पाठ प्रस्तुत करता है। इसलिए प्रेमकथा की रूढ़ियों को जबरदस्त ढंग से ध्वस्त करती हुई यह रचना प्रेम कथा की नई संभावनाओं और सामर्थ्य का दृष्टांत बन जाती है।

आकार की दृष्टि से यह उपन्यास भले ही छोटा है परंतु विषय की दृष्टि से वह 'नाविक के तीर' जैसा है। इस उपन्यास में सामाजिक जटिलता को दर्शाने के लिए शुक्ल जी ने प्रेम का सहारा लिया। प्रेम का जो रूप शुक्ल जी ने यहाँ दर्शाया है वह रूप उनके पूर्व उपन्यासों में देखने को नहीं मिलता। बद्री–बेला, सत्या–रामदास, विवेक–सुंदरी, विमल–चांद सबके सब राग विराग के शंकर सुकन्या वाले प्रेम से परे हैं। शुक्ल जी जिस समाज के जटिल संरचना को तोड़ने में लगे हुए थे, उसके लिए प्रेम का यह स्वरूप दिखाना अत्यंत आवश्यक है।

जातीय और वर्गीय जटिलता समाज में दीमक के रूप में लग कर उसे अंदर ही अंदर खोखला बना रही है। समाज में लगे इस प्रकार के दीमक को खत्म करने के लिए शुक्ल जी ने प्रेम का सहारा लिया है। इस उपन्यास में शुक्ल जी ने भारतीय समाज के उतार–चढ़ाव को दर्शाते हुए जाति एवं वर्ग के द्वन्द को स्पष्ट करने का प्रयास किया। उपन्यास के आरंभ में ही उन्होंने ऐसे दृश्य को दिखाया जिसमें वर्गीय चेतना के द्वन्द को उभारा गया है। सांस्कृतिक बंटवारे के आधार पर शहर दो वर्गों में बटा हुआ दिखाई देता है। जहाँ एक वर्ग शोरगुल में जीते हुए सफलता की लालसा मन में रखता हुआ सोचता है कि "निरर्थक भीड़ जो सब कुछ के बावजूद कहीं किसी सार्थकता की तलाश में है।"[2] वही दूसरा वर्ग शांत और सुखमय दशा का हाल सुनाता है इन्हीं दोनों वर्ग के द्वन्द को उकेरना शुक्ल जी का प्रमुख उद्देश्य है। वह कहीं जाति के रूप में संघर्षरत दिखाई देते हैं तो कहीं वर्ग के रूप में।

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में जाति व्यवस्था का बोलबाला रहा है। समय के साथ बदलाव होने के बावजूद भी आज ग्रामीण इलाकों में कहीं–कहीं जाति व्यवस्था देखी जाती है और शिक्षकों के साथ आज पढ़े–लिखे लोग भी इसे मानते हैं। सुकन्या के पिता कर्नल भारद्वाज इसी मानसिकता के व्यक्ति हैं। वे शिक्षित होकर भी ऐसी संकीर्ण मानसिकता को नहीं त्याग पाते हैं। जब सुकन्या पापा से बताती है कि शंकर मुझसे दस साल बड़ा है तो उसके पापा कहते हैं कि "उसकी जाति क्या है? अनुसूचित जाति का तो नहीं है। ज्यादातर इन्हीं जातियों के लड़के बड़े होकर एम.बी.बी.एस में दाखिल होते हैं।"[3] उपन्यासकार का मानना है कि जाति व्यवस्था कैंसर जैसी बीमारी है जो आखिरी स्टेज पर भी अपना नया रूप ग्रहण कर लेती है। जाति व्यवस्था में भले ही बदलाव आया हो परंतु से एकदम से कभी नहीं खत्म किया जा सकता है।

जाति व्यवस्था पर पिता से बहस करती हुई नई पीढ़ी की सोच वाली सुकन्या कहती है "मुझे पता नहीं और मुझे पता चलेगा भी नहीं क्योंकि उससे या किसी से भी मैं पूछ नहीं पाऊंगी। मैं जानना भी नहीं चाहती मेरे लिए

जाति का सवाल निरर्थक है।"[4] नई पीढ़ी एक तरफ तो जाति व्यवस्था में अरुचि दिखाती हैं। वही दूसरी तरफ समाज में फैली हुई वर्ग व्यवस्था का समर्थन भी करती है।

शंकर और सुकन्या नयी पीढ़ी के युवा है। वह अपने नए विचारों के साथ जीवन जीते हैं उनके लिए जाति पात का वर्ग भेद कोई मायने नहीं रखता है, परंतु सुकन्या जाति व्यवस्था के बंधन को भले ही अस्वीकार करती है पर वह वर्ग व्यवस्था से अपने आपको अलग नहीं कर पाती है। वह शंकर के अशिक्षित और सामाजिक परिवार के साथ सामंजस्य बैठा पाने की कल्पना मात्र से ही विवाह प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। जब सुकन्या की मौसी उससे पूछती है कि तुमने ऐसा क्यों किया? तब वह जवाब देती है कि "मैं 17 साल की प्रेम दीवानी लड़की नहीं हूँ। संसार और समाज को कुछ हद तक समझ चुकी हूँ। मैं जानती हूँ कि भारतीय समाज में विवाह दो व्यक्तियों के बीच नहीं होता बल्कि उन दोनों से जुड़े पूरे माहौल के बीच होता है। जिसमें दोनों के परिवार, उनके परिवेश, उनकी परंपरा और विश्वास सभी कुछ शामिल है। शंकर को और उसके पूरे परिवेश को जान लेने के बाद मेरी उत्कंठा मर चुकी है। मैं उस परिवेश से समझौता नहीं कर पाऊंगी।"[5] यहां उपन्यासकार दिखाना चाहते हैं कि आज की स्त्री की सोच क्या है, वह पिछड़ेपन तथा जीवन के यथार्थ को स्वीकार नहीं कर पाती।

शंकर और सुकन्या दोनों के बीच सामाजिक हैसियत और सामाजिक परिवेश का अंतर होने की वजह से दोनों एक दूसरे के करीब नहीं आ पाते। समय और परिस्थितियां दोनों को एक दूसरे के अतीत का परिचय कराती हैं। जिससे शंकर और सुकन्या का अनजाने में पल रहा राग, विराग में बदल जाता है। शंकर के लिए सुकन्या का अतीत उसके पिता कर्नल भारद्वाज है, जिसके कारण शंकर के पिता की मृत्यु हुई और सुकन्या के लिए शंकर का अतीत उसका गांव, टूटी झोपड़ी और अशिक्षित परिवार है। शंकर सुकन्या को अपनाना चाहता है परंतु उसका अतीत उसे अपनाने की इजाजत नहीं देता वह सुकन्या से कहता है "तुम मेरे साथ चलोगी जरूर पर तुम्हारे पीछे एक क्रूर पिता की परछाई भी चलेगी।[6] वह ऐसा इसलिए कहता है कि जब शंकर के पिता की हालत गंभीर हुई तो वह पड़ोसी गांव हरचंदपुर के डॉक्टर को रात में बुलाने जाता है, परंतु इंसानियत के भी हैसियत से डाक्टर नहीं आते जिसके कारण उसके पिता की मृत्यु हो जाती है। वह डॉक्टर कोई और बल्कि सुकन्या के पिता भारद्वाज है। जब शंकर सुकन्या के घर जाता है तो उसके पिता भारद्वाज को देखकर वह आश्चर्यचकित हो जाती है जिससे अतीत की यादें एक बार फिर उसकी स्मृति में ताजा हो उठती है।

'राग विराग' उपन्यास में 'आधारभूत परंपरा' और 'ओढ़ी हुई परंपरा' को शुक्ल जी ने कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। यहां पर आधारभूत परंपरा के रूप में शंकर के दोस्त सूरज को रखा गया है। शंकर सुकन्या के सामने सूरज के आधारभूत परंपरा की सराहना करता है परंतु सुकन्या को सूरज एक गंदा और फूहड़ व्यक्ति लगता है। उसे लगता है सूरज को न बात करने की तमीज है न उठने बैठने का तरीका है। सुकन्या के हिसाब से जो व्यक्ति अपने रोजमर्रा के कार्य को नियमित रूप से करता है वही आधारभूत परंपरा है। जो गांव के सामान्य व्यक्ति के समझ में नहीं आ सकता। सुकन्या इस प्रकार के द्वंद के साथ जीते हुए 14 साल बिता देती है। तब एक दिन अचानक सूरज से अस्पताल में उसकी भेंट होती है। वह अपनी बहू को लेकर आया है और उसके उत्तम स्वास्थ्य के लिए, बहू की जिंदगी के लिए डॉक्टर से गिड़गिड़ा रहा है, तब सुकन्या को एहसास होता है कि यही आधारभूत परंपरा है। ओढ़ी हुआ परंपरा तो बनावटी और खोखली होती है।

पत्नी, बहू, पोते के साथ सूरज भाई के वापस चले जाने के बाद सुकन्या को अनुभव होता है कि "जिसका जिक्र शंकरलाल बार–बार करता था वह आधारभूत परंपरा यही है।[7] जिस समाज में नारियों की हैसियत घास–पात जैसी हो और सभ्य माने जाने वाले परिवारों में भी जहाँ बहुओं को दहेज में एक टेलीविजन तक के लिए जला दिया जाता है वही यह बूढ़ा अपनी बहू की प्राण रक्षा के लिए जिस तरह कलप रहा था वह भावना 'सामाजिक शिष्टाचार' जैसी किताबें पढ़कर नहीं हासिल की जा सकती।

सुकन्या को जब तक इन सब चीजों का ज्ञान होता तब तक उसका जीवन खत्म हो चुका था। वह व्यक्तिगत स्वार्थ, झूठी शान, और वर्गीय सामंजस के कारण ही शंकर को छोड़ती है परंतु वह वही सामंजस्य अपने वर्ग के

सुबीर गांगुली से नहीं बिठा पाती। सुबीर और सुकन्या की शादी भले ही हो जाती है पर वह पति–पत्नी के रूप में जीवन निर्वाह नहीं कर पाते क्योंकि सुबीर शराब बहुत पीता है और वह शराब के नशे में सुकन्या को प्रताड़ित भी करता है, जिस कारण दोनों का तलाक हो जाता है। तलाक के बाद सुबीर सुकन्या को नहीं छोड़ता है वह जहां–जहां जाती है सुबीर पीछे–पीछे वहां पहुंचकर अपना अधिकार जमाता है। एक दिन अचानक बालकनी से गिरकर सुबीर की मृत्यु हो जाती है इस घटना के बाद सुकन्या आधारभूत परंपरा और ओढ़ी हुई परंपरा के अंतर को समझ जाती है।

निष्कर्ष

समाज में रहकर ही व्यक्ति सामाजिक विषमताओं और जटिलताओं के साथ अपना जीवन व्यतीत करता है। इन विसंगतियों और जटिलताओं के होते हुए व्यक्ति में असंतोष होना स्वाभाविक है। किन्तु जिस व्यक्ति में उस असंतोष को स्पष्टीकरण करने की क्षमता है वह रचनाकार होता है। शुक्ल जी ऐसे ही सुप्रसिद्ध रचनाकार है, उन्होंने सामाजिक जटिलताओं को जड़ तक पहुंचाने का काम किया है और उसके निदान के लिए अपनी कलम का सहारा लिया है। शुक्ल जी को ग्रामीण–शहरी, अमीरी–गरीबी, जाति–वर्ग, धर्म–अर्थ, राजनीतिकरण, बाजारीकरण आदि की जानकारी है। वे सामाजिक संरचना के परिवर्तन से होने वाली समस्याओं को गहराई से समझते हैं।

संदर्भ सूची

1. शुक्ल, श्री लाल, *राग–विराग,* अखिलेश का वक्तव्य, फ्लैप पृष्ठ से।
2. शुक्ल, श्री लाल, *राग–विराग,* किताबघर प्रकाश, नई दिल्ली संस्करण 2006, पृष्ट संख्या 5।
3. शुक्ल, श्री लाल, *राग–विराग,* किताबघर प्रकाश, नई दिल्ली संस्करण 2006, पृष्ट संख्या 7।
4. शुक्ल, श्री लाल, *राग–विराग,* किताबघर प्रकाश, नई दिल्ली संस्करण 2006, पृष्ट संख्या 7।
5. शुक्ल, श्री लाल, *राग–विराग,* किताबघर प्रकाश, नई दिल्ली संस्करण 2006, पृष्ट संख्या 38,39।
6. शुक्ल, श्री लाल, *राग–विराग,* किताबघर प्रकाश, नई दिल्ली संस्करण 2006, पृष्ट संख्या 50।
7. शुक्ल, श्री लाल, *राग–विराग,* किताबघर प्रकाश, नई दिल्ली संस्करण 2006, पृष्ट संख्या 97।

****